अवधी लोक साहित्य में परिवर्तित नारी–भाव

डॉ. आर.पी. वर्मा,
असि. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
इन्दिरा गॉंधी राजकीय महिलामहाविधालय,
रायबरेली, उ.प्र.

नारी में राष्ट्रीय भावना : भारतीय संस्कृति के अनुसार नारी शक्ति की प्रतीक है। वह महिष–मर्दिनी काली है। राष्ट्रीय संकट के समय उसका कोमल रूप पौरूष में बदल जाता है। देश ही उसकी आत्मा है, देश ही उसकी गति है और देश ही उसका गौरव है। देश में पृथक उसके लिए कुछ भी नहीं है। युद्धरत पति की मृत्यु हो जाने पर वह सतीत्व रक्षा हेतु जौहर करती है। विदेशियों नारियों की वीरता को देखकर उनकी भूरि–भूरि प्रशंसा की है।

मध्य युग में नारी केवल पुरूषों की वासना पूर्ति का साधन बनकर रह गई है। मुगल काल के पूर्व देश के कार्यो में नारियों में जितना सहयोग दिया उसे भुला दिया गया। अब केवल उसका बाहरी सान्दैर्य, नुपूर की मधुर झंकार और उसकी साज–सज्जा ही उसके आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बनकर रह गयी। इससे पुरूष में वासनात्मक वृत्ति का विकास हुआ है और वह पशु से भी नीचे चला गया। उसने नारी पर अपने बल का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया तथा बलिदान से एक आदर्श को प्रस्तुत किया।

पति की देश भक्ति को देखकर पत्नी के हृदय में भी त्याग की भावना बढ़ रही है। वह पति तथा अन्य समबन्धियों से बढ़कर देश के स्वाभिमान को समझती है। चित्तौड़ के सरदार चन्द्रावल को विश्वास दिलाने के लिए रानी ने अपने सिर को काटकर भेज दिया था। एक स्त्री का पति युद्ध क्षेत्र में गया हुआ था। वह तोता तथा मैना के माध्यम से अपने पति के पास रणभूमि में इस संदेश को भिजवाती है कि वह पराजित होकर वापस न लौटे :–

हए तोता मैना उड़ाइयो लश्कर मॉं, तोता मैना,
हरा दुपट्टा पीला पट्टा।

ताक छिनाछिन, मार सरासर, वल्ले ही वल्ले, हए तोता मैना।

सिर पे धरा घड़े पर झारी, हए तोता मैना खिलइयो।

सोनेक–गागर गंगा–जल पानी, हुए तोता मैना पिलइयों

सोने की थरिया मां भेजना परोसो, हुए तोता मैना खिलइयों

चंदा की चांदनी मॉं चौपर बिछायो, हए तोता मैना खिलइयो

हए तोता मैना उउइयो लश्कर मां, हए तोता मैना खिलइयो

फूलन की सेज मोती झालर की तकिया, हए तोत मैना खिलइयो

हए तोत मैना उड़ाइयो लश्कर मां, हए तोता मैना खिलइयो।

अवगुंठन भारतीय नारी का श्रेय व श्रृंगार नहीं रहा। आवश्यकतानुसार देश की रक्षा के लिए केसिरया बाना धारण करके वह स्वाभिमान के साथ युद्धक्षेत्र में कूद पड़ती थी। अवध में नारियों ने अपने पति, भाई तथा अन्य सम्बन्धियों को युद्ध क्षेत्र में प्रेषित करके अपने तथा देश के सम्मान को ऊँचा रखा। पुरूष अपने कर्त्तव्यों के प्रति उदासीन भले ही रह गया हो परन्तु नारी के समय नारी भी पुरूष के समान युद्धक्षेत्र में उतरने के लिए प्रस्तुत हो गई :–

लड़वै सीमा के मैदनवा अब तो हमहूँ जइबे हो।

भारत की हम हन वीर नारी, अब तौ हमहूँ...

झॉसी की रानी बनकै रन मां चमकब, अब तो हमहूँ...

जउन हाथ मां चुरिया खनकै, वहिमा अब चमकै तलवार हो।

जब लग संकट देस मां तज देबै साज–सिंगार हो।

भाई को विजय टीका देकर युद्ध क्षेत्र में प्रेषित करने वाली नारी ही है। भारतीय इतिहास में ऐसे उदाहरण भरे पड़े हैं कि माता हर्षित होती है कि उसका पुत्र देश के काम आ जाये। इससे बढ़कर उसके लिए सौभाग्य का विषय कोई दूसरा नहीं है। महाराज शिवा जी की माता शैशवावस्था में उन्हें बिठाकर वीर पुरूषों की गाथाओं को सुनाया करती थीं। कर्मा देवी, वीरा, पन्ना, दुर्गावती, चांद बीबी, द्रौपदी, कुंती, तारा, सारंधा तथा लक्ष्मीबाई ने देश के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया है। इन नारियों के स्वाभिमान, देश प्रेम एवं जाति के गौरव की भावना विद्यमान थी। प्राणी का मूल्य देकर गौरव की रक्षा करना इन्होंने खूब सीखा था।

बहन भी भाई को विजय टीका लगाकर युद्ध क्षेत्र में प्रेषित करती है। प्रस्तुत लोकगीत में बहन भाई को देश–रक्षा के लिए प्रेरित करती है

आई मइया पै बिपतिया सुनो हो भइया।

कोटि–कोटि नर मुंड दान कै या आजादी पाई।

पाजी दुश्मन सीमा पै नाहक रारि मचाई।

छीनै बापू की कमइया, सुनो हो भइया, आई मइया पै...।

परन्तु भाई ऐसे अवसर पर कब चूकने वाला है? उसे भी तो देश के सम्मान एवं गौरव का ध्यान है। बहन के इन प्रेरणात्मक शब्दों को सुनकर भाई ने जो प्रतिज्ञा की है वह गौरव की वस्तु बन गई है :–

जाई मइया कै बिपतिया सुनो हो बहिनी।

मोह परान का छॉड़ि समर मां, दुश्मन से लड़ि जइबे।

'मारि भगइबे' घुस पइठिन का लास पै लास बिछइबे।

दुश्मन सीमा ते भगइबे सुनो हो बहिनी।

जीते बिनु घर न जइबे सुनो हो बहिनी।

जाई मइया की बिपतिया सुनो हो बहिनी।

नारी नवयुग का संदेश लेकर उपस्थित हुई। अबला कही जाने वाली नारी सबला के रूप में दिखाई पड़ी। पुरूष के लड़खड़ाते पैरों को आश्रय दिया नारी ने। अब उसका अधिकार क्षेत्र घर तक सीमित न रहकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त होने लगा। उसका प्रेयसी रूप युद्ध में काली तथा दुर्गा के समान दिखाई दिया। देश पर विदेशियों के आक्रमण हों और वह शान्तिपूर्वक देखती रहे। यह उसके स्वभाव के प्रतिकूल रहा है। युद्ध के

समय वह प्रणय क्रीड़ा को भूल जाती है तथा उसके मस्तक पर चढ़ा सिन्दूर बिन्दु रूद्र के तीसरे नेत्र के समान हो जाता है। किसी आततायी में इतनी शक्ति कहॉ कि वह ऐसी रणचंडी का स्पर्श कर सकें।

नारी देश पर विपत्ति के आते ही समस्त आभूषणों का सहर्ष परित्याग कर देती है। आभूषण प्रिय वस्तु होने पर भी वह देश के सम्मान के लिए उन्हें तुच्छ समझती है। सुरक्षा कोष को अपने आभूषणों से भर देना वह भली प्रकार से जाती है :–

मोर लेत जाओ गरे का हारू दै आवे सुरक्षा कोष माँ।

तजि देहौं मैं साज–सिंगारू संकट आवा देस पै।

हथकरघवा का पहिनै पहरेदरवा, मोरे मन का न भावै सजना।

मोर लेत जाओ हाँ, हाँ मोर लेत जाओ नथुनी हमार। संकट आवा...।

हमहुँ जइबे लराई माँ बैरी लगाये बुरी नियत रे सजना।

अब तुमहूँ तनिक आओ होस माँ।

मोर लेत जाओ गरे का हारू दै आवै सुरक्षा कोष माँ।

पति, भाई अन्य सम्बन्धियों को युद्ध में प्रेषित करके नारी स्वयं, खेत एवं खलियान का कार्य करने को प्रस्तुत है, जिससे खाद्य सामग्री का अभाव न हो सकें। उसे विदित है कि खाद्य सामग्री के अभाव में युद्ध संचालन सफलतापूर्वक नहीं हो सकेगा :–

हम तौ करवै बलिदनवा मइया तोरे भाई हों।

छाड़ि कै आलस मेहनत करिवे अधिक अन्न उपजइबे हो।

घर–घर भरवै अन्नवा ते।

सैनिक भइया हमरे खूब छक–छक खइयें हो। हम तौ...।

रती भर तौ सोनवा अब घर माँ न धरिबै हो।

तोरा मइया दूध पिया है अब बेइमानी न करबे हो। मइया तोर...।

हमरे भइया जियत कीमा बल है तुमका आँख दिखावै हो।

किया समरथ है तुमका छीन लै जावै हो। मइया हम करबे...।

हम तौ करिबै बलिदनवा मइया तोर ताई हों।

मइया तोर ताई हों।

प्रणय विवाह

आज के प्रणय–परिणय को सह–शिक्षा व्यवस्था की देन बताया जाना है। बात बहुत कुछ सही है पर लोक में इस प्रकार के विवाह होते आये हैं जिनसे कन्याओं की विवाह सम्बन्धी स्वतंत्र प्रवृत्ति का परिचय मिलता है। एक युवक युवती के प्रांगण में जाकर बैठ जाता है और विवाह का प्रस्ताव करता है। युवती पूर्वानुरक्ता थी। लज्जावशं वह अपने माता–पिता के सम्मुख अपनी मनोभावना को स्पष्ट नहीं कर सकती है। युवती की मॉ–भाभी आदि थाल भर मोती देकर युवक से छुटकारा पाना चाहती है। भाई आकर युवक पर खड्ग लेकर झपटता है। कन्या भाई से अनुनय करती है यदि वह युवक का बध कर देगा तो उसकी जीवन नैया को कौन पार लगायेगा :–

कउन की ऊँची अटरिया सुरूज मुख छाई?

किन घर कन्या कुंवारि त दुलहौ चाहि?

अंजुल की ऊँची अटरिया कुँवरि त दुलहौ चाहि।

कउन को दूत तपसिया अँगन मेरे तपु करै?

सजना को पूत तपसिया अँगन मेरे तपु करै

भीतर ते निकसी अजिया थारू भरि मोती लिहै।

भीतर ते निकसी भैजिया थारू मोती लिहै।

लेहौन पूत तपसिया अँगन मेरो छाँड़ो।

तुम पर कन्या कुँवारि तौ हमका विवाहि देव।

बाहर ते आये वीरन भइया हाथ खड्ग लिहै।

मारौ मैं पूत तपसिया बहिन मोरी माँगे।

भीतर ते निकसी लालड़ी मोतियन माँग भरे।

जिन मारों पूत तपसिया जनम मेरो को खेइहै?

कउन की ऊँची अटरिया सुरूज मुख छाई।

ऐसे ही अन्य अनेक उदाहरण लोक जीवन में मिलते हैं जिनमें नारी के विवाह सम्बन्धी विचार–स्वातंत्रय की भावना स्पष्ट होती है।

नारी अब अवगुंठन से बाहर रहने का प्रयत्न कर रही है। अवगुंठन के कारण उसके नैसर्गिक विकास का मार्ग अवरूद्ध हो गया है। पर्दे ने उसके कार्य क्षेत्र को घर तक सीमित कर दिया। उसने स्वंय अनुभव किया और अपने को परतंत्रता से बाहर निकालने को प्रयास किया। इसमें उसे आशातीत सफलता भी प्राप्त हुई। नगर से गाँव तक धीरे–धीरे पर्दा समाप्त हो रहा है। अब नारी अवगुंठन में रहने के लिए तैयार नहीं है :–

पर्दा छाड़ि अब हमहुँ बाहर निकसब हो।

घर समाज, देश खातिर अब हमहुँ कछु करिबे हो।

अब हम खाली नाहीं बैठब हो। पर्दा छाड़ि...।

नई परिस्थितियॉ और नारी

नारी अपने कर्तव्यों के प्रति सदैव जागरूक रही है। वर्तमान युग के आर्थिक संकट को नारी ने भली प्रकार से समझा है और समाधान के लिए यह गृह क्षेत्र से बाहर भी पदार्पण करती है। अब यह अनेक सरकारी और गैर सरकारी कार्यालयों में कार्य करके गृहस्थ जीवन को सुखमय बनाने के लिए प्रयत्नशील है :–

बहिनी हमहुँ अब नौकरिया करिबे हो। हमहुँ अब घर केरी रकम बढ़इबै हो।

पइसा ते हमहुँ अब चैन केरी बंसिया बजइबे हो। बहिनी हमहुँ...।

मनई केरे पइसा माँ आपन मिलैबे हो। बहिनी हमहुँ...।

हमहुँ अब घर केरी रकम बढ़इबै हो। बहिनी हमहुँ. ..।

बहिनी हमहुँ अब नौकरिया करिबे हो। हमहुँ अब घर केरी रकम बढ़इबै हो।

शिक्षा के क्षेत्र में नारी अपने प्राचनी आदर्श को पुनः प्राप्त करने में प्रत्यनशील है। उसने अनुभव किया है कि मध्य युग में उसकी अवनति का एक मात्र कारण उसी अशिक्षा थी। अतः अपने कर्त्तव्यों को भली प्रकार समझने के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करना उससे आवश्यक समझा है :–

शिक्षा प्रसार करि घर–घर ग्यान ज्योति जलैबे हो।

हमहुँ अब स्कूलै पढ़ै जइबे हो। जन–जन का आपन पाठ पढ़इबे हो।

तबहीं राम–राज होय पायी हो। हमहुँ अब...।

शिक्षा प्रसार करि घर–घर ग्यान ज्योति जलैबे हो।

हमहुँ अब स्कूल पढ़ै जइबे हो। बाजी तबै चैन की बँसुरिया हो।

तबहीं राम राज होय पायी हो। हमहुँ अब....।

सार्वजनिक परीक्षाओं तथा प्रतियोगिताओं में जिनका आयोजन केन्द्रीय अथवा राज्य के लोक सेवा आयोगों द्वारा होता है, उनमें वे स्वतंत्र रूप से प्रतियोगी हो सकती है। लिंग के आधार पर नर–नारी के भेद को पूर्णतया समाप्त कर दिया गया है।

राजनैतिक क्षेत्र में भी नारी पुरूष से पीछे नहीं है। सन् 1942 के राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में उसने अपने रौद्र रूप का परिचय दिया है। उसके इस शौर्य के समक्ष आततायी विस्मित हो उठे। राष्ट्रीय नेताओं ने नारी के सहयोग के बिना आन्दोलनों की असफलता का अनुभव किया। चाँदबीबी, रानीलक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल जैसी अनेक महिलाओं की वीरता का गान लोग आज भी सम्मान एवं प्रेम से कर रहा है।

एक ओर शान्ति के समय नारी यदि प्रेयसी, भगिनी तथा माता है तो दूसरी ओर संकट में वीर भावना प्रजलित करने वाली शक्ति है, दुर्गा है। ऐसे समय वह पुरूष को सुप्तावस्था में नहीं देख सकती।

अवधी लोक गीतों में नारी का आदर्श

नारी का नारीत्व पुत्रवली होने मं है। इसके अंतराल में सोई हुई समस्त ममता, कोमलता पुत्र प्राप्त होते ही उमड़ पड़ती है और उसका वही कोमल ममत्वपूर्ण हृदय विश्व के कण–कण में बिखर जाता है। फलों से लदी वृक्षों की डालियां धरित्री को चूमने लगती है। वैभव सम्पन्नता की यह पुरानी कहानी है। गॉव की आशावती कुलवधू भी प्रगति के इसी व्यापार को उस समय व्यक्त करती है जब वह गर्भवती होती है :–

मचियहिं बैठिहि सासु न बहुआ से पूछै रे।

बहु कह तो मुहा पियरान गोड़ फहरावहि रे।

पुत्र–रत्न से युक्त होकर सास की चेरी बनने, ननद का मन हरने और पति की प्राण पियारी बनने की कितनी मनोरम, सुन्दर, सुखद और उदान्त कल्पना है –

ओ सासु जी हीवै चेरिया, ननद मन हरखै रे।

अपने राजा की पिरान पियारी, होरिल मोरे होइहैं रे।।

पुत्र उत्पन्न हुआ। उसकी प्रणय साधना का आज फल प्राप्त हुआ। सौभाग्य वेला में उसकी समस्त सखियाँ, ननदें आदि आनन्दोत्सव मनाती हुई पूछती हैं कि तेरा बालक इतना सुन्दर क्यों है? परिवार के अन्य लोग भी उसके पुत्र के सौन्दर्य युक्त होने पर यही प्रश्न करते है। तोष व तृप्ति का अनुभव करती हुई वधू जिस सद्भावना एवं शालीनता का परिचय देती है, वह उदान्त हृदय की कल्पना के साथ ही जीवन को सचमुच उदान्त बनाने में समर्थ है। वधू का विनम्र उत्तर दर्शनीय है :–

होरिल तो बड़ सुन्दर न जानौ कौने गुना?

हाँ हो न जानौ अम्मा के सँवारे तना जाने मौसी गुना।

न यह अम्मा के सँवारे तो ना यह मौसी गुना।

ललना मोर पिया बरन कीन्हा उनही कै धरम गुना।

सासु के वचन न टारेउँ न ननद दुतकारेव हो

ससुर कबहुँ न लाई लु की लालच नाही रे जानौ वही गुना हो।

स्वामी के मानेव कहनवा देवर कै दुलारेउँ हो।

ननदी सब के लिहेंउँ असीस ता न जानौ वही गुना हो।

प्रत्येक परिवार में पुत्र–जन्म उल्लास का हेतु होता है। पारिवारिक श्रृंखला का विधायक प्रत्येक पुत्र के जीवन में एक सुदृढ़ आशा का संचार करके उसके जीवन को एक अद्भुत स्फूर्ति एवं सजीवता प्रदान करता है। भगवान राम को भी पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। अस्तु उनके जीवन में भी उमंग होना स्वाभाविक है।

संदर्भ

- अवधी लोकगीत और परम्परा : प्रो0 इन्दु प्रकाश पाण्डेय
- भारतीय लोक साहित्य : डॉ0 श्याम सत्यार्थी
- लोक साहित्य की भूमिका : डॉ0 कृष्ण देव उपाध्याय
- हिंदी साहित्य का वृहत् इतिहास (लोक साहित्यिक वर्ग) षोड़श भाग–महापंडित राहुल सांकृत्यायन एवं डॉ0 कृष्ण्ज्ञ देव उपाध्याय
- लोकगीतों की सामाजिक व्याख्या : श्री कृष्ण दास
- ग्राम गीतों में करूण रस : श्रीमती सीता देवी तथा अन्य
- लोक साहित्य के प्रतिमान : डॉ0 कुन्दन लाल उप्रेती
- लोक जीवन की सीता : डॉ0 राम शरण सिंह
- भारत की प्रतिनिधि लोक कथाएं : सम्पादक–जयप्रकाश भारतीय
- अवधी लोक कथाएं : डॉ गुरू शरण लाल
- भारतीय नृत्य कला : श्री कैलाश चन्द्र वर्मा
- हिन्दी लोकोक्तियॉ और मुहावरे : डॉ गुलाब राय
- ग्रामीण कहावतें : श्री तेज कुमार 'अम्ब निर्मोही'
- अवध की लोककथा : श्री गोपाल कान्त
- आधुनिक हिंदी काव्य में नारी–भावना : सुश्री शैल कुमार माथुर
- मध्य युगीन हिन्दी साहित्य में नारी भावना : डॉ0 ऊषा पाण्डेय
- आधुनिक काव्य में सौन्दर्य भावना : कु0 शकुन्लता शर्मा
- अवध के प्रमुख कवि : डॉ0 ब्रज किशोर मिश्र

पत्र–पत्रिकाये

- ✓ राष्ट्र भारती : राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

- ✓ समाज : समाज विज्ञान परिषद, काशी विद्यापीठ
- ✓ जनपद : काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- ✓ कल्याण : नारी अंक, गीता प्रेस, गोरखपुर

सम्मेलन पत्रिका

- आन्ध्र गीतों में नारी–भावना : श्री गिरिराय, आश्विन–2014
- लोक संस्कति की आत्मा : श्री कोमल सिंह सोलंकी लोक से अंक–2010
- मैथिली लोक गीतों में क्रन–जीवन की अभिव्यक्ति : श्री कुशेश्वर लाल चैत्र–2011
- लोक जीवन में टोने और टोटके की मान्यता : श्री जनार्दन मुक्ति लोक सं0 लोक सं0 अंक – 2010
- अवधी लोक गीतों में सांस्कृतिक तत्व : श्री सत्यव्रत अवस्थी लोक सं0–अंक 2010
- लोकगीतों में नारी–जीवन की अभिव्यक्ति : सुश्री सरोज, लोक सं0 अंक–2010

मरूभारती

- राजस्थानी लोकगीतों में नारी–चरित्र : श्री मनोहर शर्मा, जनवरी–1957
- राजस्थानी लोक कथाओं में सांस्कृतिक चित्रण : श्री कन्हैया लाल सहल, जुलाई 1957

साप्ताहिक हिन्दुस्तान

- ❖ लोकगीतों में भाई–बहन का स्नेह : श्री गोपाल शर्मा, फरवरी, 1957
- ❖ साहित्य संदेश : लोक साहित्य की परिभाषा : डॉ0 सत्येन्द्र, जून 1946
- ❖ रसवन्ती : लोकगीतों में शासकों के अत्याचार का चित्रण – डॉ0 त्रिलोकी नाथ दीक्षित, अगस्त 1930
- ❖ रंगायन : भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर
- ❖ नाथ पथ : लखनऊ–लोक साहित्य विशेषांक, दिसम्बर 1956–1957
- ❖ सप्त सिंधु : भाषा विभाग–चंडीगढ़
- ❖ हिन्दुस्तानी : त्रैमासिक पत्रिका, इलाहाबाद लोक साहित्य : जोधपुर

Copyright © 2015, Dr. R.P.Verma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.